Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July- December 2023 4(2), 1185–1188

आजाद हिन्द फौज में जाट सैनिकों की वीरता का ऐतिहासिक अध्ययन

Diwakar Mishra [1], Shagufta Parveen[2]

[1] Research Scholar, Department of Arts, Mangalayatan University, Aligarh, India

[2] Supervisor, (Assistant Professor) Department of Arts, Mangalayatan University, Aligarh, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.2304

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

4 फरवरी 1944 को अराकान (वर्मा में, मणिपुर की सीमा के साथ) के मोर्च पर स्वाधीनता संग्राम लड़ा गया, जिसमें आजाद हिन्द फौज का पलड़ा भारी रहा। वहाँ से अंग्रेज सेना को पीछे धकेल दिया गया। 18 मार्च 1944 को 'आजाद हिन्द फौज' ने पहली बार सीमा पार कर भारत भूमि पर कदम रखा। मेजर जनरल शाहनवाज खान नं0 1 डिविजन की कमांड कर रहे थे। बाद में नं0 2 डिविजन के कमांडर भी रहे। कर्नल गुलजारा सिंह सिक्ख जाट इस इम्फाल युद्ध में आजाद ब्रिगेड की कमांड कर रहे थे। इस आजाद हिन्द फौज के डिविजन ने इम्फाल को चारों ओर से घेर लिया था। इस घेरे में ब्रिट्रिश सेना का एक डिविजन एक महीने से भी अधिक समय तक घिरा रहा था। कर्नल इनायत जान कियानी गांधी ब्रिगेड के कमांडर थे। इस गांधी ब्रिगेड ने अंग्रेज सेना को बुरी तरह से हराया था।

Keywords: इम्फाल युद्ध, आजाद जाटवीर सैनिक, I.N.A. के जवान स्वाधीनता संग्राम आदि।

प्रस्तावना

कैप्टन सूरजमल जाट– मणिपुर की धरती पर सबसे पहले राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा फहराने वाले के कैप्टन सूरजमल थे जिन्होंने अपनी कम्पनी के साथ भारतीय सीमा से प्रवेश किया था और अंग्रेज सेना से युद्ध करके भारत भूमि के कुछ भाग को आजाद कराया था।[1] सेकिण्ड लेफ्टिनेण्ट अमरसिंह जाट–आप अब्बा चौकी की रक्षा कर रहे थे। इनके पास केवल 20 सैनिक थे। एक दिन अंग्रेजी सेना के 150 सैनिकों ने इस पर जबरदस्त आक्रमण कर दिया और भारी तोपों से गोले बरसाए। जब शत्रु सैनिक मोर्चे के निकट आए तो I.N.A. के जवान उन पर शेर की तरह झपट पड़े। शत्रु भारी संख्या में अपनी लाशें छोड़कर भाग गया। शत्रु ने दूसरा आक्रमण उससे भी जोरदार कर दिया। इस बार भी भारी हानि उठाकर शत्रु को पीठ दिखानी पड़ी। सायंकाल शत्रु ने सबसे भयंकर तीसरी बार भारी तोपों से धावा किया।[2] लेकिन इसमें भी हार शत्रु को ही मिली। फिर इससे थोड़ा आगे उत्तर मे डम्काल है और उससे उत्तर में कोहिमा है।[3] कैप्टन चन्द्रभान जाट का आतंक सन् 1945, फरवरी 13 और 14 की रात को अंग्रेजी सेना ने इरावटी नदी को पार करने का प्रयत्न किया। INA पर तोपों से भारी गोलाबारी की और मोटर–बोटो द्वारा इरावदी नदी पार करने का प्रयत्न किया। सबसे अधिक भयंकर लड़ाई पागन मोर्चे पर हुई। वहाँ कैप्टन चन्द्रभान ने बहुत अच्छी स्थिति पर अपनी मशीनगन जमा रखी थी। अंग्रेजी सेना लंकाशायर (इंग्लैण्ड) के टॉमी लोगों की थी। कैप्टन चन्द्रभान ने टॉमी लोगों की सेना के मोटर बोटो को इरावदी नदी में अपने निकट आने दिया और अन्त में इनको आसानी से हरा दिया। कैप्टन रणपत सिंह जाट आपने

शत्रु से बड़े साहस व वीरता से युद्ध किया और रणक्षेत्र में ही वीरगति पा गये थे। आपको 'शेरे जंग' की पदवी से अलंकृत किया गया था। लांसनायक मोलड़ सिंह जाट आप शत्रु से वीरता से युद्ध लड़ते–लड़ते शहीद हो गये थे। आपको 'शहीदे भारत' के सर्वोच्च पदक से अलंकृत किया गया था।[4] कर्नल गुलजारा सिंह सिक्ख जाट नं0 1 डिविजन के आजाद ब्रिगेड की कमांड ड्रम्फाल युद्ध में कर रहे थे और वर्मा में लौट आने तक इसी के कमांडर रहे। मेजर मेहरचन्द जाट आप आजाद ब्रिगेड में गुरिल्ला बटालियन के इंचार्ज थे। लेफ्टिनेण्ट कर्नल रणसिंह जाट आप सुभाष ब्रिगेड की एक बटालियन की कमांड कर रहे थे और सैनिक अभियान में आपने महत्वपूर्ण काम किया था। लेफ्टिनेण्ट कर्नल रामस्वरूप जाट आप इन्टेलीजैंस के इंचार्ज थे। आपने अराकान के मोर्चो पर महत्वपूर्ण सफलतायें प्राप्त की थी। कर्नल दिलसुख मान जाट देश के सबसे वरिष्ठ सैनिक अधिकारी थे, जिनको आजाद हिन्द फौज में 'डिप्टी क्वार्टर मास्टर जनरल' के महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया गया था। मेजर अमीर सिंह जाट आप पहले मिलिट्री स्टोर्ज के इंचार्ज रहे और बाद में उन्हें पैराशूट बटालियन का कमांडर नियुक्त किया गया। कैप्टन महताब सिंह जाट आप पहले असिस्टैंट डायरेक्टर सप्लाइज और ट्रांसपोर्ट रहे तथा बाद में उन्हें स्टाफ कैप्टन नियुक्त किया गया।[5] कैप्टन प्रीत सिंह जाट आप इन्टैलीजेन्स ग्रुप में महत्वपूर्ण सेवा करते रहे। एक दिन जब वह पनडुब्बी द्वारा भारत की ओर आ रहे थे तो विस्फोट हो जाने के कारण उनका चेहरा बुरी तरह झुलस गया। इसके बाद उन्हें आई.एन.ए. अकादमी में नियुक्त कर दिया गया। कैप्टन कन्हैया सिंह, कैप्टन गणेशीलाल, कैप्टन जीतराम, मेजर बलवन्त सिंह सब जाट यह चारों अफसर हरियाणा निवासी थे। इन्होंने भारतीय नागरिकों को प्रशिक्षण देने में बहुत महत्वपूर्ण काम किया।[6] लेफ्टिनेण्ट रणजोध सिंह सिक्ख जाट आपने बड़ी वीरता से शुत्र का मुकाबला करके क्लंक चौकी की रक्षा की थी। कैप्टन गुरबख्श सिंह सिक्ख जाट आप आजाद ब्रिगेड की एक बटालियन में थे। अपने इम्फाल युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई थी। लेफ्टिनेन्ट ज्ञानसिंह जाट आपने 17 मार्च, 1945 को वर्मा में टॉगजिन के युद्ध में शत्रु से बड़ी वीरता से लड़ते–लड़ते कुर्बानी दी थी। कैप्टन बागरी जाट आपने 30 मार्च, 1945 को वर्मा मेडरावदी नदी क्षेत्र में शत्रु से बड़ी वीरता से युद्ध किया और वीरगति को प्राप्त हुए कैप्टन अमरीक सिंह सिक्ख जाट आपने अपने सैनिकों के साथ शत्रु से युद्ध करके क्लंक चौकी पर कब्जा कर लिया, परन्तु वहीं पर अमर शहीद हुए। आजाद हिन्द फौज के इतिहास की गहराई से खोज की जाये तो बड़ी संख्या में जाट सैनिक के युद्धों में वीरता के कारनामें मिलेंगे। खेद है इस विषय में अधिक सामग्री प्राप्त न हो सकी। आज़ाद हिन्द फौज के सैनिकों ने वीरता के कार्य करके नेताजी द्वारा जितने तमगे एवं उपाधियाँ प्राप्त की उनमें से आधी से अधिक जाटवीर सैनिकों ने प्राप्त की। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय आह्वानों, उत्तेजनाओं एवं प्रयत्नों से प्रेरित भारतीय राजनैतिक संगठनों द्वारा संचालित अहिंसावादी और सैन्यवादी आन्दोलन था जिनका एक समान उद्देश्य अंग्रेजी शासन को भारतीय उपमहाद्वीप से जड़ से उखाड़ फेकना था। इस आन्दोलन की शुरूआत 1857 में हुए सिपाही विद्रोह को माना जाता है। स्वाधीनता के लिए हजारों लोगों ने अपने प्राणों की बलि दी। हजारों सालों से जाट स्वातंत्रय युद्धों में सामूहिक रूप से भाग लेते आए है परन्तु इतिहास में उनके अमर बलिदानों की कहानी का उल्लेख नहीं हुआ है। जाट रणभूमि में अपने जौहर बार–बार दिखला चुका है फिर भी राजपूत, सिख, मराठों जैसे युद्ध सम्बन्धी प्राचीन दन्त–कथाएं उसके भाग्य में नहीं है। अपनी मातृभूमि के लिए जिस दृढ़ता से जाट लड़ सकता है और कोई नहीं लड़ सकता। यह अपनी स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देते है। 1857–1947 एक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ और देखते ही देखते पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में एक एक विराट रूप धारण कर लिया इन प्रान्तों के जाट आर्य समाज के अनुयायी बन गए। आर्य समाज के जाट धार्मिक नेताओं ने जैसे स्वामी स्वतंत्रता नन्द जी, महात्मा भक्त फूल सिंह जी, आचार्य भगवानदेव स्वामी ओमानन्द जी आदि ने लोगों में देशभक्ति एवं स्वतंत्रता प्राप्ति की भावना पैदा की। जाट स्वतंत्रता प्रेमी, सच्चे हितकारी है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े सभी जाट वीरों के नाम भर लेना असंभव है यह तो एक झलक भर है। बाबा शाहमल ने 1857 की जनक्रांति में तत्कालीन जनपद के तहसील बड़ौत और उसके आस–पास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उन्होंने हजारों किसानों का कुशलतापूर्वक नेतृत्व किया। बाबा शाहमल ने अपनी वीरता से अंग्रेजों के साधनों को ठप्प किया और इस क्षेत्र को दिल्ली के लिए आपूर्ति क्षेत्र में बदल दिया। उन्होंने हिडंन पुल को तोड़कर अंग्रेजों के लिए बहुत मुश्किल पैदा कर दी। 19 जुलाई 1857 को अंग्रेजों की एनफील्ड राइफलों से सुसज्जित सेना के साथ भयंकर युद्ध करते हुए लगभग 200 सैनिकों के साथ वीरगति प्राप्त की। 18 मार्च 1857 को मथुरा में राजाओं की एक गुप्त मीटिंग हुई जिसमें राजा नाहर सिंह को शिरमोर बनाया गया और बहादुरशाह जफर ने उन्हें दिल्ली के पश्चिमी हिस्से को चाक चौंवंद रखने के लिए कहा उन्होंने पश्चिमी सीमा से अंग्रेजों को दिल्ली में घुसने नहीं दिया इसलिए अंग्रेज उन्हें आयरन गेट ऑफ दिल्ली कहने लगे।[7] राजा नाहर सिंह की बहादुरी से तिलमिलाये अंग्रेजों ने उन्हें संधि के लिए दिल्ली बुलवाया और उन्हें बन्दी बनाकर राजद्रोह का मुकद्दमा चलाया गया। इसमें उन्हें दोषी मानकर 9 जनवरी 1958 को दिल्ली में फॉसी की सजा दी गई। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों की जीत हुई अंग्रेजो ने देशी रियासतों में राजाओं की अधिनस्थ कर जागीरदारों को बड़े–बडे अधिकर दे दिए। मोहर सिंह ने 1927–1934 तक लोगों में अपने भजनों व मिसालों द्वारा शिक्षा, सामाजिक सुधार तथा छुआछुत को मिटाने के लिए जांगीरी जुर्म के खिलाफ संघर्ष में काफी योगदान दिया। मोहर सिंह पूनिया, ने अपनी कविताओं, भजनों व भाषणों द्वारा अंग्रेजों के शोषण, व अन्याय अत्याचारों के विरूद्ध बिगुल बजाया। जाट वंशज आर्य समाजी धार्मिक नेता स्वामी स्वतंन्त्रानन्द जी, महात्मा भक्त फूल सिंह, आचार्य भगवान देव जी, चौ0 छोटूराम भी आर्य समाजी थे जो स्वामी

दयानन्द सरस्वती को अपना धार्मिक गुरु मानते थे। आर्य समाजी तो अंग्रेजों को देश से बाहर निकालकर स्वराज चाहते ही थे। अतः इन्होंने कांग्रेस को अपनाया और हजारों लोगों ने राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लिया भारतीय जनता को देश की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। अगस्त 1920, में चौ0 छोटूराम ने कांग्रेस का साथ दिया क्योंकि चौ0 साहब गांधी जी के असहयोग आन्दोलन से सहमत नहीं थे।[8] उनका विचार था कि इस आन्दोलन से किसानों का हित नहीं होगा। उनका मत था कि आजादी की लड़ाई संवैधानिक तरीकों से लड़ी जाए। कुछ बातों पर मतभेद होते हुए भी चौ0 साहब गांधी जी के प्रशंसक रहे। चौ0 साहब ने अपना कार्यक्षेत्र उ0प्र0, पंजाब, राजस्थान तक फैला लिया और जाटों का सशक्त संगठन तैयार किया। भारत के जागरण के साथ ही देशी रियासतों के लोगों में भी बड़ी तेजी से जागृति आई। सन् 1920 के दशक में दुकानदारों और जागीरदारों के अत्याचार दिन–प्रतिदिन बढ गए। इस कारण किसानों द्वारा विभिन्न आन्दोलन चलाए गए, साथ ही देश भर में गांधी जी के नेतृत्व देश में स्वतंत्रता आन्दोलन भी चल रहा था। इन सभी के कारण राज्य की प्रजा में जागृति आई और उन्होंने संगठन बनाकर अत्याचारों के विरूद्ध आन्दोलन शुरू किया जो प्रजामण्डल आन्दोलन कहलाएँ।[9] सन् 1936 के कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित हुआ जिसमें कहा गया कि कांग्रेस रियासती जनता से अपनी एकता की घोषणा करती है और स्वतंत्रता को उनके संघर्ष के प्रति सहानुभूति प्रकट करती है, त्रिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस ने रियासत जनता के प्रति समर्थन की घोषणा कर दी, इससे जनता में बड़ा उत्साह और उमंग जागी। सन् 1938 के प्रजा मण्डलों की कोई राजनीतिक गतिविधियों नहीं थी। इसी के साथ प्रजामण्डल ने संवैधानिक सुधार एवं कृषि सुधार के लिए आन्दोलन चलाए। अब तक प्रजामण्डल का काम शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित था। ग्रामीण क्षेत्र में पकड़ न होने से प्रजामण्डल में जाट पंचायत के साथ जागीदार विरोधी संधि में शामिल होने पर विचार किया शेखावटी में भी यह विचार चल रहा था कि क्या हमें किसान पंचायत का विलय प्रजामण्डल में कर देना चाहिए। एक गुट जिसमें चौ0 घासीराम पण्डित ताडकेश्वर शर्मा, विद्याधर कुल्हारी आदि थे की सोच थी कि इससे किसानों की मांगे अपेक्षित होगी।[10] दूसरी ओर हरलाल सिंह, चौ0 नेतराम सिंह, आदि इस विचार के थे कि प्रजामण्डल जैसे सशक्त संगठन में शामिल होने से किसान पंचायतों को सीमित क्षेत्र से निकालकर विशाल क्षेत्रों तक पहुँचाने का यह एक सशक्त मध्यम बन सकेगा। जिससे जागीरी जुल्मों का वे अधिक सक्रियता से और ताकत से मुकाबला करने में समर्थ होंगे। इस द्विविधि विचारधारा के कारण शेखावटी का राजनीतिक संघर्ष विभाजित हो गया। किसान आन्दोलनों में महिलाओं ने भी पुरुषों का बढ़–चढ़कर साथ दिया। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में जाट महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। सीहोट के ठाकुर मानसिंह द्वारा सीतिया बास नाम में गांव में किसान महिलाओं के साथ किए गए दुर्व्यवहार के विरोध में 25 अगस्त 1934 को कटराथल नामक स्थान पर श्रीमती किशोरी देवी की अध्यक्षता में एक विशाल सम्मेलन किया। इस सम्मेलन में लगभग 10,000 महिलाओं ने भाग लिया जिनमें श्रीमती दुर्गा देवी, श्रीमती रमादेवी, श्रीमती उतमादेवी आदि प्रमुख थी। इस सभा की अध्यक्षता श्रीमती किशोरीदेवी धर्मपत्नी हरलाल सिंह थी। यह महिला सभा इस इलाके में प्रथम व अनूठी घटना थी। महिलाएं विभिन्न रंग–बिरंगे परिधानों में सुज्जित, गीत गाती हुई, कटराथल के लिए आई बात–बात में सामंतो का उपहास और उन्हें चेतावनी देते हुए, शेखावटी की मर्दानी महिलाएं सभास्थल पर एकत्रित हुई। भारत वीर सपूतों की धरती है। और यहाँ आजादी की लड़ाई में कई वीरांगनाओं ने भी अपना बलिदान दिया है

निष्कर्ष

जाट स्वतंत्रता प्रेमी है और अन्याय व अत्याचार करने वालों के विरूद्ध अपनी तलवार उठाते है। यह अपनी स्वतंत्रता को कायम रखने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देते है। जाट सच्चे देशभक्ति है यह शोध साक्षी है कि देश को जब–जब क्षत्री भावना प्रधान वीर युवकों की आवश्यकता हुई तब–तब जाट जाति ने अपने देश की रक्षा एवं सेवा में अपने नौनिहालों की उत्सर्ग करने को अमर उदाहरण दिए। प्राचीनकाल से भारतवर्ष पर विदेशी आक्रमणकारियों से टक्कर लेकर जाटों ने देश की रक्षा की। अंग्रेजों ने धीरे–धीरे इस भारतवर्ष पर अपना राज्य स्थापित किया और उन्होंने भारतीयों के साथ अन्याय और अत्याचार किए। इसकी फलस्वरूप भारतवासियों ने अंग्रेजों के विरूद्ध 1857 ई0 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम किया जिसमें अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर को अपना नेता बनाया। अंग्रेजों को भारत से निकालकर किसी–न–किसी रूप में लगे रहे अन्त में भारतीयां को सफलता मिली और 15 अगस्त 1947 ई0 को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हो गई। अब देखना यह है कि इतनी बड़ी सफलता कैसे मिली इसके क्या कारण थे, जाटों ने अंग्रेजों से किस प्रकार युद्ध किए तथा बलिदान दिए। इसका मैने अपने इस शोध पत्र में विस्तार से उल्लेख किया है

CONFLICT OF INTERESTS

None

ACKNOWLEDGMENTS

None

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ठाकुर देशराज : रियासती भारत के जाट जनसेवक, पृ. 184
डॉ. पेमाराम : शेखावटी किसान आन्दोलन का इतिहास, पृ. 31
चौधरी, श्री मूलचन्द जी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ. 115–120
चौधरी, श्री मूलचन्द जी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ. 140–141
चौधरी, श्री मूलचन्द जी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ. 121–126
रिपोर्ट श्री जाट बोर्डिग हाउस जोधपुर, शुरू से जून 1936 ई. पृ. 11
जाट इतिहास, (उत्पत्ति और गौरव खण्ड) लेखक– ठाकुर देशराज, जधीना–भरतपुर, प्रकाशक, ठकुरानी निवेणी देवी मित्रा मण्डल प्रेस, राजामण्डी आगरा, 1937
जाट इतिहास : लेखक रणजीत सिंह, रोहतक 1980
सन्धि का झासा देकर राजा नाहर सिंह को अंग्रेजां ने दी फासीः नवभारत टाइमस, जनवरी 2018
जाट योद्धाओं का इतिहास : लेखकः भलेराम बेनीवाल, प्रकाशन बेनीवाल पब्लिकेशन, नरवाल, हरियाणा